

## डी.डी.टी. और पक्षियों के अंडों का रंग

ताज़ा शोध से पता चला है कि डी.डी.टी. के कारण पक्षियों के अंडों का रंग भी बदल जाता है और उनकी खोल पतली व कमज़ोर हो जाती है। वैसे तो पक्षी-प्रेमी लोग जानते हैं कि पक्षियों के अंडों के रंग व पैटर्न पर्यावरण से प्रभावित होते हैं, मगर ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के एण्ड्र्यू गोस्लर द्वारा किए गए अध्ययन से पता चला है कि अंडों का चितकबरे पैटर्न और रंग हमें प्रदूषण की स्थिति का अंदाज़ दे सकते हैं।

हाल ही में किए गए अनुसंधानों से इस बात के प्रमाण मिल रहे थे कि अंडों का चितकबरा पैटर्न उस पक्षी की सेहत का संकेतक होता है, जिसने ये अंडे दिए हैं। जैसे यह देखा गया है कि यदि कैल्शियम की कमी हो, तो अंडों के धब्बे गहरे रंग के हो जाते हैं। इसी प्रकार, यदि मादा पक्षी का प्रतिरक्षा तंत्र दुर्बल है तो अंडों का रंग नीला-हरा हो जाता है। इन्हीं परिणामों के मद्दे नज़र गोस्लर ने सोचा कि अंडों की रंगत पर डी.डी.टी. का असर देखना चाहिए।

डी.डी.टी. एक कीटनाशक है जो मच्छरों को मारने में तो बहुत कारगर है मगर पक्षियों व अन्य जंतुओं की सेहत पर भी बुरा असर डालता है। कई देशों ने इसके उपयोग पर प्रतिबंध लगाया है। डी.डी.टी. के कारण पक्षियों के अंडों का छिलका पतला पड़ जाता है। गोस्लर ने एक स्पैरो हॉक के 49 अंडों का अध्ययन किया। ये अंडे ऐसे पक्षियों

के थे जिनके शरीर में डी.डी.टी. काफी मात्रा में पाया गया था। गोस्लर यह देखकर आश्चर्यचकित रह गए कि इन अंडों का रंग नीलापन लिए था और इन



पर धब्बे भी अधिक गहरे रंग के थे। वैसे तो गोस्लर को इसकी उम्मीद भी थी क्योंकि डी.डी.टी. कैल्शियम के अवशोषण को रोकता है और प्रतिरक्षा तंत्र को भी प्रभावित करता है।

गोस्लर प्रयास कर रहे हैं कि अंडों की शकल में होने वाले परिवर्तनों और डी.डी.टी. की मात्रा का सम्बंध स्थापित कर पाएं ताकि अंडों को देखकर किसी स्थान पर प्रदूषण की मात्रा का पता लगाया जा सके।

ये निष्कर्ष काफी सही समय पर सामने आए हैं क्योंकि मलेरिया के बढ़ते प्रकोप को देखते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन ने घरों के अंदर डी.डी.टी. के उपयोग की सिफारिश की है। इस तरह के अवलोकन हमें बता सकते हैं कि पर्यावरण की हालत क्या है। (स्रोत विशेष फीचर्स)